International Journal of Trend in Scientific Research and Development (IJTSRD)
Volume 5 Issue 4, May-June 2021 Available Online: www.ijtsrd.com e-ISSN: 2456 – 6470

हरियाणवी लोक कला का सशक्त माध्यम - बदलते परिवेश में लोक गीत-संगीत

डॉ. अंजु रानी शर्मा

राजकीय महाविद्यालय सफीदों (जींद)

प्राक्कथन

हरियाणा भारत के उत्तर पश्चिम में बसा एक अत्यंत समृद्धशाली क्षेत्र है। यह वैसे तो 1 नवंबर 1966 को अलग राज्य बना परन्तु सांस्कृतिक रूप से यह बहुत ही प्राचीन समय से यह एक प्रादेशिक इकाई के रूप में विद्यमान रहा है। यदि हम हरियाणा के लोक साहित्य की बात करें तो किसी भी देश प्रदेश का साहित्य वहां के जनमानस की भावनाओं इच्छाओं आकांक्षाओं की नैसर्गिक प्रतिध्वनि करता है। लोक धरा किसी भी प्रदेश की लोक संस्कृति और लोक भावनाओं की घोतक होती है। इसीलिए तो कहा जाता है कि यदि वेद ईश्वर प्रदत है तो लोक साहित्य धरती से प्रसूत। लोक साहित्य की विविध विधाओं में लोकगीत ही ऐसा स्वरूप है जो की लोक संगीत को विविधता प्रदान करता है। जिस प्रकार बादलों के घिरते ही मोर नाचने लगता है और पेड़ पर बौर आते ही कोयल कूकने लगती है। इसी तरह जीवन के सुख-दुख के उद्गारों को प्रकट करने के लिए जो संगीत अपने आप मुखरित हो उठे उसी को हम लोक संगीत कहते हैं। इसमें ना तो स्वर का बंधन होता है ना ही ताल का नियम। यह तो मन की भावनाओं को प्रकट करने का एक स्वरित रूप है जिसमें प्रधानता तो भले ही शब्दों की है परंतु भावात्मक अभिव्यक्ति का माध्यम स्वर तथा लय है। लोक संगीत की अमूल्य धरोहर को सुरक्षित करने के लिए केवल लोक संगीतज्ञ ही माध्यम हैं जो अपने लोक संगीत के माध्यम से प्राचीन सांस्कृतिक धरोहर को परिपक्व बनाकर उसे विकसित करते हैं। लोक कलाकारों द्वारा प्रस्तुत लोक साहित्य लोकगीत, लोक वाद्य, लोक नृत्य से संबंधित होता है।

How to cite this paper: Dr. Anju Rani Sharma "Powerful Medium of Haryanvi Folk Art - Folk Songs and Music in the Changing Environment" Published in International Journal of Trend in Scientific Research and Development (ijtsrd), ISSN: 2456-6470, Volume-5 | Issue-4, June 2021, pp.1832-1835, URL: www.ijtsrd.com/papers/ijtsrd43629.pdf

IJTSRD43629

Copyright © 2021 by author (s) and International Journal of Trend in Scientific Research and Development Journal. This is an Open Access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution License (CC BY 4.0) (http://creativecommons.org/licenses/by/4.0)

हरियाणवी लोक कला का सम्पूर्ण विवरण:

लोक साहित्य को लोक गाथाओं के रूप में, कथाओं के रूप में प्रदर्शित करने की परम्परा है और लोकगीत की इन परंपराओं को चार शैलियों में विभाजित किया गया है। होली राग, लोक राग, किस्सा राग, सांग संगीत। होली राग में होली से संबंधित गीत होते हैं गेय होने के कारण इन्हीं राग की संज्ञा दी गई है।शास्त्रीय संगीत से इस संज्ञा का कोई जोड़ या अभिप्राय नहीं है।

ये होली राग, किस्सा राग, सांग, संगीत और मुक्तक काव्य के रूप में दिखाए जाते हैं। इन हरियाणवी लोकगीतों में अधिकतर स्थानीय कहावतें, बुझावल, तुकबंदी प्रमुख तौर पर रहती है। जिनमें संस्कारों के गीत, उत्सवों के गीत, धार्मिक अनुष्ठानों के, ऋतुओं के गीत विशेष रूप से गए जाते हैं। लोक कला को गीतों के साथ-साथ स्वांग करके भी लोगों को दर्शाया जाता है और इन स्वांगों में संतों के द्वारा किए गए तप की कहानियां, साधुओं की कहानियां, वीरों की कहानियां, लोगों की धर्म परायणता की कहानियां, राजाओं की दानवीरता की कहानियां, लोक

पाखंडों पर आधारित कहानियां होती हैं। जिन्हें गायन एवं नृत्य के मिले-जुले हास्य परिहास से दिखाया जाता है।

होली के गीतों के साथ नगाड़ा बजाया जाता है। दो-दो की टोली में दो दो की जोड़ी में दो-दो टोलियां बन जाती हैं जिसमें एक टोली पहले आकर राम की गाथा गाती है और दूसरी टोली उसे दोहराती है। होली राग गाने वालों को डालियार कहा जाता है। इन गीतों में श्रृंगार रस प्रधान होता है। क्योंकि फागुन का महीना होता है और शीत ऋतु जाती हुई तथा खेत सरसों के पीले फूलों से भरकर सौंदर्य भरी मादकता प्रदान करते हैं। इसीलिए इस मौसम के लोक गीतों में श्रृंगार रस की प्रधानता रहती है।

यद्यपि हरियाणा लोक कलाओं का एक समृद्ध क्षेत्र है तथापि किसी भी कला में समय के साथ-साथ थोड़े से परिवर्तन की आवश्यकता भी है क्योंकि मनुष्य और समय परिवर्तनशील है और यदि शुद्धता को नष्ट किए बिना हम अपनी शिक्षा, अपने व्यवहार, अपनी आवश्यकताओं में परिवर्तन को शामिल करेंगे फिर चाहे वह हमारे जीवन की दिनचर्या हो या हमारा संगीत। समयानुसार थोड़े से परिवर्तन के साथ हम समाज के साथ सामंजस्य बनाकर अपनी लोक कला को विकसित करने के उत्कृष्ट माध्यम लोकसंगीत में निहित लोकगीतों को एक नए रूप के साथ प्रसिद्धि दे सकने में सक्षम हो सकते हैं।

किसी भी देश या जाति की संस्कृति उसकी शताब्दियों से अर्जित आध्यात्मिक, वैज्ञानिक, कलात्मक तथा दार्शनिक उपलब्धियों का भंडार है और यही संस्कृति प्रत्येक जाति या देश का वादी स्वर भी होती है। मनुष्य अपने जन्म से लेकर बुढ़ापे तक अपने देश की संस्कृति से ही प्रभावित होता है और यही प्रभाव उसके संपूर्ण जीवन को पोषित करता है।संस्कृति ज्ञान, भाग्य और कर्म का सामंजस्य है। संस्कृति जीवन के शोध की एक ऐसी क्रिया है जिसमें व्यक्ति और समाज एक व्यापक बौद्धिक चेतना तथा सौंदर्य बोध में अपना सृजनात्मक व्यवहार करता है। इस प्रकार कहा जा सकता है की संस्कृति किसी भी व्यक्ति समाज तथा राष्ट्र की धरोहर होती है। "वर्तमान का इतिहास सदैव भूतकाल की कृतियों से ही जन्मा होता है और वही हमारे भविष्य का मार्गदर्शन भी करता है"।

हरियाणा के संगीत का इतिहास:

ऐसा लोक संगीत जो वैदिक काल से शास्त्रीय संगीत गायन शैली के सबसे अधिक निकट है और संगीत की यह विधा हरियाणा की प्राचीन और पारंपरिक विधा भी रही है। यहां के लोगों का जीवन इतना संगीतमय है कि उनकी हर क्रिया में संगीत रचा बसा हुआ है। जीवन से लेकर मृत्यु तक, तीज - त्यौहार, खेत खलियान, सुख-दुख सभी क्रियाएं जैसे संगीत के द्वारा ही प्रकट की जाती हैं।लोक साहित्य को कहानी,गीत और कहावतों के माध्यम से दर्शाया जाता है। कहानियां कभी कभी सत्य और कभी कभी मनोरंजन के लिए भी गढ़ी जाती हैं। दूसरे गीत जिनमें एक विशेष नायक के कार्यों का विवरण होता है जैसे भूरा और बादल की कथा, हदी रानी की गाथा,जयमल पन्नाधा की गाथा और कहावतों में तुकबंद कहावतें, स्थानीय कहावतें, बुझावल आदि बहुत प्रचलित हैं।[1] हरियाणा के लोकगीतों का धरातल बड़ा रंग रंगीला, उन्मुक्त तथा जीवन के आंदोलनों से आंदोलित होता है। रीति रिवाज,तीज त्यौहार,उत्सव और खेत खलिहानों में ही हरियाणा के लोक गीत बसे होते हैं गीतों के संगीत पक्ष में साहित्य पक्ष भी सबल होता है।[2] एक साधारण सा दिखने वाला कृषक भी संगीत निर्देशक की भांति अपने विचार कुछ यूं रखता है -

दस चंगे बैल देख ता दस मन बैरी
हक हसाबी ना वा साक्सीर जोरी
भूरी भैंस का दुध वा राबड़ घोलणा
इतना दे करतार तै फेर ना बोलना। । [3]

हरियाणा के गीतों में प्रमुखतया - संस्कार गीत जैसे:पुत्र जन्म के समय गाए जाने वाले, विवाह के समय गाए जाने वाले और मृत्यु के समय गाए जाने वाले गीत होते हैं।

ऋतु गीत - इन गीतों में देवी - देवताओं के गीत, तीज - त्यौहार के गीत।

कृषि गीत - फसल, किसान, और गाय - बैल के गीत होते हैं।

राजनीतिक गीत - देश प्रेम के गीत,युद्ध में भर्ती होने के गीत होते हैं।

सामान्य दिनचर्या के गीत - इन गीतों में पनिहारी का गीत, हिचकी गीत, चरखे का गीत, प्रभाती गीत, फागुण के धमाल गीत, व्यंगात्मक गीत जो की पति, जीजाऔर साली पर बने होते हैं। इसके अतिरिक्त नाट्य गीत, जकड़ी के भजन व गीत जो कि सार्थक और निरर्थक भावनाओं में निबद्ध होते हैं।[4]

यह तो सर्वविदित ही है कि किसी भी प्रदेश के लोक गीतों के रचयिता अज्ञात ही होते है। अधिकतर गीत आपसी व्यवहार, बोलचाल की भाषा के शब्दों की बनावट,देश तथा

संस्कृति से संबंधित होते हैं। ये किसी एक विशेष व्यक्ति द्वारा रचित ना होकर अपितु एक प्रदेश एक समूह से जुड़े होते हैं। इनमे लोक संस्कृति का वास्तविक चित्रण होता है।। ये न कुछ छिपाते हैं और न दूसरे का छिपने देते हैं। आज भी केवल हरियाणा ही एक ऐसा प्रदेश है जहां के लोगों के बारे में यह प्रचलित है की ये बेबाक होते हैं और जो बात इन्हें अच्छी न लगे उसको मुंह पर ही कह देते हैं। हरियाणवी लोकगीत में नारी वेदना का चित्रण, यौवन की उमंगों के साथ साथ जीवन की सादगी, आपसी प्रेम और मस्ती तथा बड़ों के द्वारा शिक्षाप्रद कहानियां इनके प्रमुख गुण हैं जो इनके गीतों से सपष्ट प्रकट होते हैं। इनके गीत लोक मंगलता तथा रंजकता के प्रतीक होते हैं।[5]

हरियाणा के लोक संगीत का श्रेय:

जोगी, भाट और सांगियो को जाता है जिन्होंने हरियाणवी संगीत को घर घर पंहुचानें में सबसे अधिक अग्रणी भूमिका निभाई है। इन्होंने बिना किसी विशेष साज या उपकरण के केवल अपने अंगों के हाव जी भाव प्रदर्शित करके आमजन को अपनी ओर आकर्षित किया हैं। [6] उनकी गूंजती हुई नैसर्गिक आवाज, समृद्ध लोक धुन और प्रस्तुति का अति प्रभावशाली ढंग इस कला का प्रमुख स्तोत्र रहा है। हरियाणा की शुद्ध लोक कला में यदि हम गीतों का गहराई से विवेचन करेंगे तो पाएंगे कि यद्यपि हरियाणा शास्त्रीय संगीत से बहुत अधिक जुड़ा हुआ नहीं रहा लेकिन इस पर संगीत के शास्त्र रूप का प्रभाव भी नहीं पड़ा हम ऐसा नहीं कह सकते क्योंकि संगीत से प्रेम का अंदाजा तो इसी जानकारी से लग जाता है कि दादरी तहसील में कितने ही गावों का नाम उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत पर आधारित है जैसे: नंदयम,सारंगपुर, बिलावाला, वृंदावन, तोड़ी, आसावरी, जय श्री, मालकोष्ण,हिंडिला, भैरवी, और जींद ज़िले में जय जयवंती,मालवी, मल्हार इत्यादि। आज भी दिवाली, दशहरा जैसे मेलो और तीज - त्यौहारों में गाए जाने वाले गीत वही हैं जो सदियों से परंपराओं में बंधे हैं और आज भी शादी - विवाह के अवसर पर सबसे पहले उन्हीं प्राचीन परंपरावादी रीति - रिवाज के साथ शगुन के गीत गाए जाते हैं और विवाह का शुभारंभ किया जाता है। आज भी सांगीतिक वाद्यों में ढोलक, डमरू, चिमटा, मंजीरा, सारंगी, एक तारा जो भाट बजाते हैं, बीन, खंजरी, नगाड़े और वायु यंत्र शंख का प्रयोग बिल्कुल वैसे ही किया जाता है जैसे प्राचीन समारोहों में और विशेष पर्वों में किया जाता था। आज भी लोक नृत्यों में फाग नृत्य, नूर नृत्य, रतवाई नृत्य, झूमर नृत्य धमाल, सांग, गोगा नृत्य छड़ी नृत्य, खोडिया और गणगौर पूजा और रासलीला तथा पूर्ण भगत जैसी पौराणिक कहानी - कथाएं और अनुष्ठानों जैसे गीतों पर जैजैवंती, पहाड़ी और भैरव तथा भैरवी और अहीरों के द्वारा गाए जाने वाले गीतों पर राग पीलू इत्यादि रागों की छाया है। नृत्य जन्म जन्मांतरों से आज भी इसी रूप में हरियाणा से जुड़े हुए हैं।

हरियाणवी संगीत पर पड़ोसी सीमावर्ती प्रदेशों का प्रभाव:

यदि सांगीतिक दृष्टि से हरियाणा का अवलोकन करें तो हरियाणा के गीत, वाद्य, नृत्य और सांगों पर आरंभ से ही पड़ोसी राज्यों की भाषा बोली और संगीत का प्रभाव रहा है जैसे रासलीला में ब्रज से प्रभावित भाषा का प्रभाव और गणगौर पूजा में राजस्थान की भाषा का प्रभाव देखा जा सकता है। ऐसी ही एक सकारात्मक बदलाव की पहचान का आरंभ सन 1968 में आई फिल्म "धरती" ने हरियाणा को फिल्म जगत में पहचान बनाने में एक विशेष भूमिका निभाई और यही हरियाणवी संगीत के बदलते परिवेश का एक अहम दौर रहा। यद्यपि 1980 तक मुंबई हिंदी फिल्में और उनके संगीत ने फिल्म इंडस्ट्री पर आधिपत्य जमा रखा था लेकिन हरियाणवी फिल्में भी धीमी गति से अपनी पहचान बनाने की और अग्रसर रही और 1984 में बनी "चंद्रावल" का संगीत जैसे हिंदी सिनेमा में हरियाणवी फिल्मों के लिए "मील का पत्थर "साबित हुआ और यही से हिंदी सिनेमा में हरियाणवी भाषा एवं संगीत का चलन शुरू हो गया जो कि कालांतर में "सुल्तान और दबंग "जैसी फिल्मों में स्पष्ट देखने को मिलता है।

2000 में, अश्विनी चौधरी ने हरियाणवी फिल्म लाडो के लिए राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कारों में एक निर्देशक की सर्वश्रेष्ठ पहली फिल्म का इंदिरा गांधी पुरस्कार जीता। 2010 में हरियाणा सरकार ने घोषणा की कि वे हरियाणवी भाषा की फिल्मों को बढ़ावा देने के लिए एक फिल्म बोर्ड स्थापित करने पर विचार कर रहे हैं। 62वें राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कारों में, हरियाणवी फिल्म "पगड़ी द ऑनर" ने हरियाणवी में सर्वश्रेष्ठ फीचर फिल्म का पुरस्कार जीता और बलजिंदर कौर ने उसी में अपनी भूमिका के लिए सर्वश्रेष्ठ सहायक अभिनेत्री का राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार जीता।

बदलते हरियाणवी संगीत पर पाश्चात्य संगीत का प्रभाव: यदि हरियाणवी संगीत पर हम पाश्चात्य संगीत का प्रभाव देखें तो प्रकृति के इस नियम की अनदेखी नहीं कर सकते

क्योंकि प्रकृति का नियम सदैव परिवर्तनशील रहा है तो यहां पर रहने वाले प्रत्येक जनमानस भी बदलाव की आशा रखता है और इस आशा में सबसे महत्वपूर्ण योगदान संगीत का ही होता है।

बदलते परिवेश में पाश्चात्य संगीत के प्रभाव से हरियाणा का संगीत भी अछूता नहीं रहा और जैसा कि संगीत और संस्कृति एक दूसरे के पूरक होते हुए इसमें सबसे अधिक प्रभाव शिक्षा का होता है क्योंकि शिक्षा एक ऐसा माध्यम है जो किसी भी विषय के प्रचार और प्रसार का सबसे अधिक सशक्त और उपयुक्त माध्यम होता है। इसी प्रयास के तहत अनेक शिक्षण संस्थानों में हरियाणवी पॉप को शामिल किया गया जिससे हरियाणवी संगीत की लोकप्रियता को बढ़ावा मिले। वर्तमान काल में तो आज हर तीज - त्यौहार, शादी - विवाह के अवसरों पर हरियाणवी पाश्चात्य संगीत का मिलन जैसे हर जगह देखने को मिलता है और यह इस गाने से प्रकट भी होता है :

"हट जा ताऊ पाच्छे नै
नाचण दे जी भर कै नैं"

लोक संगीत के प्रचार प्रसार के लिए कुछ सुझाव:
निरंतर बहते प्रभाव में कई नीतियां जो शामिल होती हैं वह कभी - कभी सुखकारी भी होती हैं परंतु उसके साथ-साथ अनेकों समस्याएं और चुनौतियां भी लेकर आती हैं जिनका समय रहते निवारण और पालन करना अति आवश्यक होता है संगीत में इस प्रकार के बदलाव यद्यपि नई पीढ़ी को रोचक अंदाज तो दे देंगे परंतु यह बदलाव कहीं इसके परंपरागत लोक रूप को खो ना दे और कालांतर में हम इतिहास के इस रूप का पता ढूंढने में भी अक्षम हो जाएं। इसलिए ऐसी स्थिति से पहले लुप्त होती इस कला के कलाकारों को आज के युवा वर्ग से जुड़े हुए सभी कार्यक्रमों जैसे युवा- महोत्सव सम्मेलनों द्वारा परिचित करवाया जाए जिससे दोनों पीढ़ियां में एक सकारात्मक और विकसित रूप में स्थापित किया जा सके और आम जन संगीत के रूप से इतना प्रभावित हो की यह घर घर में प्रचलित हो जाए।

आभार पुस्तक सूची:

[1] वर्ड हैंड बुक ऑफ फोकलोर पृष्ठ स०4 डॉ० सत्येंद्र

[2] डॉ oभीम सिंह मलिक, हरियाणा का लोक साहित्य एवम संस्कृति। पृष्ठ स o 78

[3] हरियाणा प्रदेश का लोक साहित्य, डॉ शंकर लाल यादव। पृष्ठ स o 25

[4] हरियाणा प्रदेश का लोक साहित्य। पृष्ठ संख्या 73, 74, 75

[5] हरियाणा का पुरातत्व इतिहास - हरियाणा के लोक गीत। डॉ oबाबू राम, पृष्ट संख्या 194

[6] कनौजी लोक साहित्य में समाज का प्रतिबिंब। डॉo सुरेश चंद्र त्रिपाठी। पृष्ठ संख्या 106